**भगत नामदेव - सबद ८**

**मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥**

**रागु गूजरी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ५२५**

मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥
आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥१॥
कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥१॥ रहाउ ॥
जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥
जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥२॥
जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ ॥
नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥३॥२॥

**सार:** अदृश्य और शाश्वत शक्ति ही हमारी दृश्यित वास्तविकता को आकार देती है, वैसे ही जैसे जड़ें पेड़ को सहारा देती हैं। वास्तविकता हमारी इंद्रियों से जुड़ी समझ से कहीं आगे तक फैली हुई है, जिसे पृथ्वी की आकर्षण शक्ति और उप-परमाणु कण जैसी अनदेखी शक्तियों का बहुत सहारा मिलता है। हालांकि यह ऊर्जा दिखाई नहीं देती लेकिन, हम अपनी ज़िंदगी के हर पहलू में इनका असर अनुभव कर सकते हैं। इसी तरह, भले ही विचार स्वयं न दिखें, लेकिन वह हमारे व्यवहार और निर्णय को काफी प्रभावित करते हैं। यह पहचानना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि केवल इसलिए कि कोई चीज़ दिखाई नहीं देती, इसका मतलब यह नहीं है कि वास्तविकता में उसका अस्तित्व या महत्व नहीं है।

मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥
बिना किसी कण की अशुद्धि के, हर तरह के दोष से दूर, सुगंध की तरह, वह सर्वव्यापी शक्ति हमारे भीतर विराजमान है। यह जीवन-शक्ति के उन अमूर्त, अप्रत्यक्ष गुणों को उजागर करता है जो उसके मूर्त गुणों को आधार प्रदान करते हैं।

आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥१॥
उसे उभरते किसी ने नहीं देखा, साथियों, कौन उसके मूल को सचमुच जान सकता है? (१)

कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥१॥ रहाउ ॥
साथियों, उस सर्वव्यापी शक्ति का वर्णन कौन कर सकता है या कौन समझ सकता है जिसका कोई कुल या वंश नहीं है। (१)(विराम)

जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥
जैसे आकाश में उड़ते हुए पक्षी का मार्ग, जिसका कोई निशान नहीं मिलता।

जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥२॥
जैसे जल में तैरती हुई मछली का मार्ग भी अदृश्य रहता है। (२)

जिउ आकासै घड़ूअलो म्रिग त्रिसना भरिआ ॥
जैसे प्यासा मृग, जो अपनी प्यास बुझाने की चाह में, आकाश को ही जल से भरा घड़ा समझ लेता है।

नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥३॥२॥
नामदेव कहते हैं कि उनकी स्वामी वही सर्वव्यापी शक्ति है जो सृष्टि के तीनों लोकों में व्याप्त है। अर्थात वह ऊर्जा, जो सृष्टि का सृजन करती है, उसका पालन-पोषण करती है और अंततः उसका संहार करती है, वह अस्तित्व के प्रत्येक कण में विद्यमान है। (३)(२)

**तत्त्व:** भक्त नामदेव उस अवर्णनीय शक्ति पर चिंतन करते हैं जो हमारी इंद्रियों की पहुँच से दूर, सृष्टि की रचना करती है, उसका पालन और संहार करती है। यह अदृश्य शक्ति सृष्टि के हर पहलू में प्राण फूँकती है, यह अस्तित्व के भीतर ठीक वैसे ही मौन होकर विचरण करती है, जैसे आकाश में कोई

पक्षी या जल में कोई मछली रहती है। वह कहते हैं कि यह ऊर्जा भले ही दूर प्रतीत हो किंतु यह सदैव हमारे भीतर और हमारे आस-पास, एक प्रिय साथी की भाँति उपस्थित रहती है।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**